पौष मास की पुष्यता

डा. सुदर्शन श्रीनिवास शाण्डिल्य*

जिस मास की पूर्णिमा तिथि पुष्य नक्षत्र में हो उसे पौष मास कहते हैं। पुष्य नक्षत्र पोषक माना गया है। लेखक ने पौष मास के सम्बन्ध में यहाँ दो प्रकार से व्याख्या करते हुए कहा है कि विवाह, उपनयन, मुण्डन एवं गृह-निर्माण इन्हीं चार कर्मों का निषेध पौष मास में किया गया है, क्योंकि ये कर्म सौर मास के आधार पर किये जाते हैं। दूसरी ओर अन्य सभी प्रकार कर्म , जो चान्द्रमास के आधार पर किये जाते हैं, उनके लिए यह पौष मास पुष्टिकारक है।

दुर्गां गणपतिं विष्णुं शिवं दिनकरं तथा।
पञ्चब्रह्मात्मकं देवं वन्दे विघ्ननिवृत्तये।।

सनातन धर्म के लौकिक पारलौकिक शक्ति संचरण में विशिष्ट रहस्य का अवदान अग्रसर है। इसका परिक्षेत्र बहुत व्यापक है। आंशिक निश्चित परिधि में पौषमास पर आलेख शीर्षक सान्निध्य को पुष्ट कर रहा है। यह सर्वविदित है कि मुख्य रूप से मास दो प्रकार के होते हैं1. सौरमास और 2. चान्द्र मास।

सौरमास उसे कहते हैं जब सूर्य निर्धारित गति से एक राशि से दूसरी राशि पर संक्रमित होते हैं तो मास स्वरूप का निश्चय होता है। जैसे जबतक मेष राशि पर सूर्य रहते हैं तबतक वैशाख मास कहते हैं. जैसे

मेष	-	वैशाख	वृष	-	ज्येष्ठ
मिथुन	-	आषाढ	कर्क	-	श्रावण
सिंह	-	भाद्रपद	कन्या	-	आश्विन
तुला	-	कार्तिक	वृश्चिक	-	अग्रहायण
धनु	-	पौष	मकर	-	माघ
कुम्भ	-	फाल्गुन	मीन	-	चैत्र

विवाहादि शुभमुहूर्तों के निर्धारण में सौर मास की महत्ता होती है।12 राशियों पर मेषादि क्रम से वैशाखादि मासों का निर्धारण किया गया है। यह है सौर मास का संक्षिप्त परिचय।

चान्द्र मास का निर्धारण नक्षत्र से सम्बद्ध है। जैसे-

अश्विनी	-	आश्विन,	कृतिका	-	कार्तिक,
मृगशिरा	-	मार्गशीर्ष,	पुष्य	-	पौष,
मघा	-	माघ,	पूर्वाफल्गुनी	-	फाल्गुन,
चित्रा	-	चैत्र,	विशाखा	-	वैशाख,
ज्येष्ठा	-	ज्येष्ठ,	पूर्वाषाढा	-	आषाढ.
श्रवणा	-	श्रावण,	पूर्वभाद्र	-	भाद्रपद।

*व्याकरणाध्यापक, श्रीराम संस्कृत महाविद्यालय, सरौती, अरवल। पटना आवास- ज्योतिषभवन, शिवनगर कालोनी, मार्गसंख्या 10, बेऊर जेल के पीछे, पटना।

जिस नक्षत्र से जिस मास की सम्बद्धता है, प्रायः वह नक्षत्र उस मास की पूर्णिमा तिथि में सन्निविष्ट रहता है। हाँ, गति के कारण पूर्णिमा तिथि आगे-पीछे वह नक्षत्र अवश्य रहता है। अतः नक्षत्र के प्रभाव से तत्सम्बद्ध मास प्रभावित होगा।

पौष शब्द का अर्थ

अमरकोष में पौष मास के तीन पर्याय शब्द है- पौषे तैषसहस्यौ द्वौ (1.4.14) के अनुसार पौष, तैष एवं सहस्य। रामाश्रमी टीका में पौष शब्द की व्यत्पत्ति है- पुष्येण तिष्येण च युक्ता पौर्णमास्यस्मिन्। स पौषः अर्थात् पुष्य नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा जिस मास में हो उसे पौष कहते हैं। पुष्य शब्द से "नक्षत्रेण युक्तः कालः"(पाणिनि सूत्र- 4.2.3) से अण् प्रत्यय, "तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्राणि य लोप इति वाच्यम्" इत्यादि वार्तिक (6.4.144) से य का लोप होने पर 'पौष' शब्द बनता है।

यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि पुष्य नक्षत्र का ही पर्याय शब्द है- तिष्य, जो तुष् तुष्टौ धातु से "सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानां य उपधायाः" सूत्र (6.4.144) से क्यप् प्रत्यय कर 'तिष्य' शब्द की साधुता होती है, जिसकी व्यत्पत्ति है- तुष्टन्ति अस्मिन् इति तिष्यः। पुष्णाति सिद्धयन्ति सर्वाणि कार्याणि इति पुष्यः। अर्थात् जिसमें सभी कार्यों की सिद्धि पुष्टि होती है वह पुष्य है। इस व्युत्पत्तिलभ्य अर्थों के आधार पर सभी 27 नक्षत्रों में पुष्य नक्षत्र सर्वतः श्रेष्ठ है तो निश्चित ही पुष्य नक्षत्र सम्बद्ध मास भी श्रेष्ठ है।

27 नक्षत्रों में पुष्य को सिंहस्थानापन्न माना गया है। शेष नक्षत्रों को मृग। यथा-

पापैर्विद्धे युते हीने चन्द्रताराबलेऽपि च।
पुष्ये सिद्ध्यन्ति सर्वाणि कार्याणि मङ्गलानि च।।
ग्रहणे विद्धाप्यशुभान्वितोऽपि विलोमगोऽपि करोत्यवश्यम्।
सकलार्थसिद्धिं विहाय पाणिग्रहणेव पुष्ये।।

अर्थात् चन्द्रतारा बलहीन तथा पापविद्ध या अन्य अशुभ दोषों से युक्त होने पर भी पुष्य नक्षत्र सर्वसिद्धिदायक है। मात्र पाणिग्रहण संस्कार को छोड़कर। इसके पीछे शास्त्रीय आर्षतर्क है कि पुष्यनक्षत्र अतिसुभबलवता होने के कारण वैवाहिक नक्षत्रादि-शुभता दुर्बल हो जाती है अतः वैवाहिक नक्षत्र में पुष्य का परिगणन नहीं है। शेष अशेष सुभकार्यों के मुहूर्त निर्णय में पुष्य का आदरणीय स्थान है। विशेष रूप से तन्त्रशास्त्रों में मात्र पुष्य नक्षत्र का ही प्रयोग किया गया है। मन्त्रमहार्णवादि तन्त्रशास्त्र में दो मुहूर्त को विशेष स्थान दिया गया है- रवि-पुष्ययोग तथा गुरुपुष्य-योग। दोनों में मात्र पुष्य ही योगकारक है। रविपुष्ययोग वर्ष में दो-तीन बार ही मिलते हैं। इस योग में सविधि सादर बिल्वमूल का प्रयोग कर सर्वारिष्टनाशकारी होता है। गुरुपुष्ययोग में सविधि सादर अपामार्ग तथा बाँधागोभी का मूल एकसाथ बाँधने से सौभाग्य की वृद्धि होती है। इस तरह पुष्य नक्षत्र सर्वथा प्रशस्त है।

पौष मास को लेकर भ्रान्ति

एक भ्रान्ति बहुकाल से सर्वथा प्रवृत्त है कि इस मास को खरमास कहकर निन्दनीय माना गया है। इसके पीछे काल्पनिक तर्क संचार है। यथा वर्ष में दो मास खरमास संज्ञक लोकव्यवहृत है। पहला पौषमास तथा दूसरा चैत्र मास। इसका तथाकथित विद्वज्जन तर्क प्रस्तुत करते हैं कि बृहस्पति ग्रह आत्माकारक है सूर्य जब धनुराशि तथा मीनराशि पर संक्रमित होते हैं तब क्रमशः पौषमास तथा चैत्रमास अग्रसर होते हैं। ग्रहाधीश सूर्य के धनु-मीन पर संक्रमित होने से धनु-मीन के स्वामी गुरु आत्महीन हो जाते हैं। अतः पौष-चैत्र मास खरमास कहलाता है जो विवाहादि के योग्य नहीं रहता है।

खरमास किसे कहते है?

इससे मैं सहमत नहीं हूँ। जब पुष्य नक्षत्र महिमा में यह उल्लेख है कि **पापैर्विद्धे युते हीने चन्द्रताराबलेऽपि च।** अर्थात्

पुष्य नक्षत्र पापविद्ध, पापयुत तथा चन्द्रतारा के बलहीन होने पर भी सर्वकामसिद्धिकारक होता है तब उक्त तर्क अस्तित्वहीन हो जाते हैं। अतिबलवत्ता के कारण पौषमास में विवाहादि वर्जित है। चैत्रमास में तो ब्राह्मणों का उपनयन संस्कार विशेष प्रशस्त हितकारी माना है। अतः इसे खरमास कहने के पीछे जो निन्दनीय भाव है वह अज्ञानमूलक अशास्त्रीय है। जैसे शतं जीव के स्थान पर शन्तन जीव का प्रयोग अज्ञानमूलक है। उसी प्रकार खर शब्दार्थ के अज्ञात होने के कारण निन्दनीय अग्रसर है।

खरमास शब्द का वास्तविक अर्थ

खरमास शब्द जो खर शब्द है, वह वास्तव में संस्कृत का 'खल' शब्द है, जो सामान्य रूप से दुष्ट के अर्थ में व्यवहार किया जाता है। लेकिन इसका दूसरा अर्थ भी है। प्रायः सभी तत्सम शब्द एकार्थक सह अनेकार्थक भी होते हैं। खल शब्द भी मुख्यतया दुष्टवाचक होते हुए अनेकार्थक है। संचयार्थक खल् धातु से अच् प्रत्यय करने पर 'खल' शब्द की सिद्धि होती है, जिसका अर्थ होता है- संकलन करना। मेदिनीकोष के अनुसार "खलः कल्के भुवि स्थाने क्रूरे कर्णेजपेऽधमे।" इस प्रकार खल शब्द कल्क अर्थात् चूर्ण के अर्थ में भी प्रयुक्त होता है। धान आदि का संग्रह, उसे झाड़ना आदि खल शब्द से अभिप्रेत है। 'हायन' शब्द- अथ हायनाः। वर्षार्चिर्व्रीहिभेदाश्च (अमरकोष- 3.1.108) के अनुसार वर्ष, किरण एवं नीवार मानक धान्य के लिए प्रयुक्त होता है। एतावता खलहायन शब्द रूप संयोजन से संचय करने की भूमि का अर्थ निकलता है। वहीं खलहायन शब्द कालान्तर खलिहान रूप में लोकव्यवहृत होने लगा है। पौष मास में खलिहान की उपयोगिता सिद्ध होती है। एतावता खरमास, खलमास, खलिहान- ये सभी शब्द धान के संरक्षण-संचय का अर्थ देते हैं। इसका काल खरमास कहलायेगा। इस प्रकार, खरमास संस्कृत का शब्द न होकर देशज शब्द है। भ्रान्तिवश लोगों ने इसे तत्सम शब्द मान लिया और इसका अर्थ गदहा, रुक्ष, कठोर आदि के रूप में लेकर इस मास को गर्हित मान लिया।

शब्दस्वरूप संचरण में शास्त्रीय या लौकिक कारण तो अवश्य ही होगा। इसी आधार पर भाषाविज्ञान अस्तित्वधारी है। धान्यसंरक्षण को ही अभिप्रेत कर शास्त्रीय कृत्यों का वर्जन ऋषियों की दूरदर्शिता का परिचायक है।

खरमास में वर्जित कार्य

गार्ग्य के वचन को बृहद्दैवज्ञरंजन नामक ज्यौतिष ग्रन्थ में इस प्रकार उद्धृत किया है-

मीने धनुषि सिंहे च स्थिते सप्ततुरङ्गमे।
क्षौरमन्नं न कुर्वीत विवाहं गृहकर्म च।।

अर्थात् मीन, धनु एवं सिंह में जब सूर्य रहें तब क्षौरकर्म(प्रथम क्षौरकर्म-मुण्डन), अन्नप्राशन, विवाह, गृहनिर्माण कार्य नहीं करना चाहिए। इस निषेध मास से पौष मास का धार्मिक अर्हता हीन होना गलत है।

खरमास में क्या करें?

वैसे तो आत्मकल्याणधर्म कभी भी किसी भी क्षण में वर्जित नहीं है जब मृत्यु का निश्चय नहीं है तो आत्मस्वरूपप्रापक धर्म का वर्जन कही नहीं है- सततं मामनुस्मर युद्धस्व च। गीता कहती है- हे अर्जुन मुझे सतत समरण करो।

न धर्मकालः पुरुषस्य निश्चितः न चापि मृत्युः पुरुषं प्रतीक्षते।
सदा नरो मृत्युमुखेभिधत्ते सदा हि धर्मस्य क्रियैव शोभना।। (व्यास)

यह तो आत्मकल्याण धर्म विषय निर्णायक वचन है। इसके अतिरिक्त भी कुछ लौकिक धर्मानुष्ठान 'निर्णयसिन्धु' में विहित है। पृष्ठसंख्या- 316, पंक्ति 10

कल्पतरौ भविष्ये
पौषे मासि यदा देवि शुक्लाष्टम्यां बुधो भवेत्।

तस्यां स्नानं जपो होमस्तर्पणं विप्रभोजनम्।।
मत्प्रीतये कृतं देवि शतसहस्राधिकं भवेत्।
अत्रैव रोहिण्यामार्द्रायोगो पुण्यमत्त्वं ज्ञेयम्।।

भगवान् विष्णु लक्ष्मीजी से कह रहे हैं हे देवि पौषमास शुक्लपक्ष अष्टमी तिथि बुधवार के समवेत होने पर गंगास्नान, जप, होम, तर्पण, विप्रभोजन मेरी प्रसन्नता के लिए जो करे उसे लक्षगुणा फल मिलता है। अल्पकाल में इतना पुण्यसंग्राहक व्रत सम्प्रति लोक में व्यवहृत न होना अनवधानता है। पंचाङ्गों में इसका उल्लेख होना चाहिए। उक्त तिथि में यदि रोहिणी-आर्द्रा नक्षत्र का संयोग हो जाये तो अगणित पुण्य का संचार होता है। तो क्यों खरमास से निन्दनीयता का दुबोध

अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत् पौषमाघयोः।
अर्धोदयः स विज्ञेयो कोटिसूर्यग्रहैः समः।।

अर्थात् पौष तथा माघ मास की अमावस्या व्यतीपात योग तथा श्रवणा नक्षत्र से युक्त हो तो सूर्यग्रहण समान फलदायक होता है। कितना विलक्षण योग है, जिसका उपयोग आज नहीं हो रहा है।

धर्मसिन्धु में पौषमास में विशेष विहित धर्म का उल्लेख नहीं है। मात्र मकर संक्रान्ति निर्णय की चर्चा है। वह तो सर्वत्र व्यापक है। वर्षकृत्य प्रथम भाग में पौषमास कृत्य में अर्द्धोदय योग की चर्चा है। वहाँ पर विशेष प्रमाण के साथ संचरित है, यथा-

स्कान्दे-
अर्धोदये तु सम्प्राप्ते सर्वं गंगासमं जलम्।
शुद्धात्मानो द्विजाः सर्वे भवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः।
यत्किञ्चिद्दीयते दानं तद्दानं मेरुसन्निभम्।

स्कन्दपुराण में कहा गया है कि अर्धोदय योग होने पर सभी नदियों के जल गंगाजल के समान माने जाते हैं तथा सभी द्विज शुद्ध आत्मा वाले ब्रह्म के मान माने जाते हैं। अर्थात् इस मास में दान देते समय दान के पात्र का विचार नहीं करना चाहिए। सभी दान के पात्र हो जाते हैं। इस काल में जो कुछ भी दान किया जाता है वह मेरु पर्वत के समान विशाल हो जाता है।

इस तरह पौषमास पुष्यता का आलेख विद्वज्जन के समक्ष उपस्थापित है। इसका कुछ आधार शाब्दिक है, कुछ शास्त्रीय है अतः यह सर्वमान्य आदरणीय होना चाहिए। शाब्दिक विवेचन का आधार प्राज्ञमनीषा का विवेच्य विषय है। लोकव्यवहार देखकर वह भाव अग्रसर हुआ है। कम से कम पौष मास में शात्रविहित कर्म का लौकिक प्रयोग होना चाहिए। पौष पूर्णिमा में कौशिकी स्नान का भी महत्त्व है। मिथिला में इसका प्रयोग होता है।

अन्त में माननीय सम्पादक श्री भवनाथ झाजी को अन्ततः साधुवाद देता हूँ, जो प्रच्छन्न विषयों का चयन कर लेखकों को प्रवृत्त करते हैं।

***

पौष मास में अर्द्धोदय योग

अमार्कपातश्रवणैर्युक्ता चेत् पौषमाघयोः।
अर्धोदयः स विज्ञेयो कोटिसूर्यग्रहैः समः।।

अर्थात् पौष तथा माघ मास की अमावस्या व्यतीपात योग तथा श्रवणा नक्षत्र से युक्त हो तो सूर्यग्रहण समान फलदायक होता है। अर्धोदय योग होने पर सभी नदियों के जल गंगाजल के समान माने जाते हैं तथा सभी द्विज शुद्ध आत्मा वाले ब्रह्म के मान माने जाते हैं। अर्थात् इस मास में दान देते समय दान के पात्र का विचार नहीं करना चाहिए। सभी दान के पात्र हो जाते हैं। इस काल में जो कुछ भी दान किया जाता है वह मेरु पर्वत के समान विशाल हो जाता है।